E-CONTENT FOR SEMESTER II

उभरती हुई पद्धतिगत समस्याएं – 1
(EMERGING METHODOLOGICAL ISSUES – 1)

BY: SWATI SOURAV
POSTGRADUATE DEARTMENT OF SOCIOLOGY
PATNA UNIVERSITY

परिचय
(INTRODUCTION)

- इस खंड में हम ज्ञान-मीमांसा के दो महत्वपूर्ण उभरते स्कूलों के बारे में चर्चा करेंगे: भाष्य विषयक (hermeneutics) और उत्तर-आधुनिकतावाद (post-modernism)।
- इन दोनों स्कूलों ने प्रत्यक्षवाद के लिए संकट के रूप में काम किया क्योंकि ये प्रत्यक्षवाद के सिद्धांतों पर सवाल उठाते हैं और अत्यधिक आलोचना करते हैं।
- आइए हम उन विवादों की समझ के साथ शुरू करें जो सामाजिक विज्ञान के पद्धति क्षेत्र में मौजूद थे।

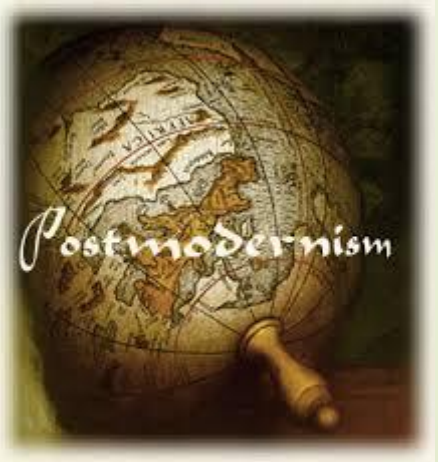

सामाजिक विज्ञान में पद्धतिगत विवाद

(METHODOLOGICAL DISPUTES IN THE SOCIAL SCIENCES)

- पिछले कुछ समय से दो मुख्य परंपराएं सामाजिक विज्ञान के दर्शन पर हावी हैं, उन लोगों के बीच विभाजित प्राणी जिनके लिए सामाजिक विज्ञान कारणों की खोज के माध्यम से सामाजिक घटना का स्पष्टीकरण है, और जिनके लिए सामाजिक विज्ञान सामाजिक क्रिया के अर्थ की समझ और व्याख्या है।
- सामाजिक विज्ञान की प्रकृति पर इस विवाद का एक लंबा इतिहास है जिसके दौरान यह कई रूपों में प्रकट हुआ है।
- जर्मनी में 1890 के दशक में अर्थशास्त्र के तरीकों (मेथोडेनस्ट्रेट) पर विवाद हुआ था और कार्ल मेन्जर (1841 -1921), नव शास्त्रीय ऑस्ट्रियाई अर्थशास्त्री, ने जोर देकर कहा कि सैद्धांतिक अर्थशास्त्र के सटीक कानून प्राकृतिक विज्ञानों के समान ही हैं जैसे कि यांत्रिकी। जर्मन युवा आर्थिक इतिहास स्कूल के गुस्तोव शमोलर (1 838-1 91 7) ने कार्ल मेन्जर (ब्रायंट 1985 देखें) का खुलकर विरोध किया।
- श्मोलर सोसाइटी फ़ॉर सोशल पॉलिसी (वेरेन फर सोज़ियापोलिटिक) के भी सदस्य थे, जिसे 1872 में सुधार आंदोलन के रूप में ईसेनच में स्थापित किया गया था।
- सोसाइटी (वेरिन) ने कभी ठोस राजनीतिक कार्यक्रम नहीं उठाए, इसके बजाय इसने सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में विशिष्ट ठोस समस्याओं के कई अध्ययन प्रकाशित किए।

To be Cont.

- इन अध्ययनों के लिए, श्मोलर ने मेन्जर के कटौतीत्मक और अमूर्त दृष्टिकोण के विरोध में एक प्रेरक, अनुभवजन्य और ऐतिहासिक दृष्टिकोण की वकालत की।
- इस बिंदु पर, कुछ नव-कांतियन दार्शनिकों ने बहस में प्रवेश किया और विवाद अर्थशास्त्र के पद्धति पर सामाजिक विज्ञान की प्रकृति के बारे में संघर्ष से सामान्यीकृत हो गया।
- 1894 के अपने रेक्टर के संबोधन में हीडलबर्ग नव-कांतिआन स्कूल के विंडलबैंड (1848-1915) ने वैचारिक मानव विज्ञान (ideographic human sciences) से नाममात्र के प्राकृतिक विज्ञान (nomothetic natural sciences) को अलग पहचान दी।
- उनके अनुसार, यह अंतर, प्रकृति या समाज के इन विज्ञानों के अध्ययन का उद्देश्य होने के कारण नहीं था, यह अंतर इन विज्ञानों के अलग-अलग संज्ञानात्मक रुचियों और लक्ष्यों का परिणाम था।
- प्राकृतिक विज्ञान का एक तकनीकी लक्ष्य और रुचि है जबकि मानव विज्ञान का एक व्यावहारिक लक्ष्य और संज्ञानात्मक हित है।

To be Cont.

- जर्मनी में सामाजिक विज्ञान की कार्यप्रणाली पर एक और महत्वपूर्ण बहस वैज्ञानिक अनुसंधान के मूल्य और उद्देश्य (वेर्तुर्तेइल्स्सत्रेइत) (Werturteilsstreit) पर बहस थी, जो 1903 में शुरू हुई और एक दशक से अधिक समय तक चली, और जिसमें एक प्रसिद्ध प्रतिभागी मैक्स वेबर थे।
- वेबर ने अपने विशेष तरीके से बहस को काटा, हालांकि उन्होंने खुद को ऐतिहासिक स्कूल (श्मोलर, विंडेलबैंड) के वंशजों में गिना।
- उसके लिए सामाजिक संसार अद्वितीय वस्तुओं और विलक्षण विन्यास से बना था। उन्होंने सामाजिक विज्ञान के लिए अनुपयुक्त विश्लेषण को अस्वीकार नहीं किया।
- सभी सामाजिक क्रिया के 'मूल्य प्रासंगिकता' (value relevance) में विश्वास करते हुए, वेबर ने सामाजिक विज्ञान के लिए 'व्याख्यात्मक समझ' (interpretative understanding) की पद्धति को देखा, लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि इसे कारण विश्लेषण (causal analysis) द्वारा पूरक किया जाना था।
- न केवल वेबर की 'मूल्य प्रासंगिकता' की श्रेणी ने कारण विश्लेषण को बाहर नहीं किया, बल्कि इसने वेबर को 'मूल्य-मुक्त' सामाजिक विज्ञान की वकालत से भी बाहर नहीं रखा और यही वह मुद्दा था, जिसकी शुरुआत उन्होंने 1900 के दशक में श्मोलर से की थी।

To be Cont.

- अंत में, जर्मनी में प्रत्यक्षवाद या प्रत्यक्षवाद विवाद (Positivismusstreit) पर द्वितीय विश्व युद्ध की बहस हुई, जो 1961 में टूबिंगन में जर्मन सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन को पॉपर के उद्घाटन भाषण के साथ शुरू हुई।
- पॉपर ने सामाजिक विज्ञानों के तर्क पर सत्ताईस शोध प्रस्तुत किए और एडोर्नो ने उसका उत्तर दिया।
- यह बहस पोपर और एडोर्नो के विरोधी-प्रत्यक्षवादी रुख की वकालत की गई एक सकारात्मक स्थितिवादी के बीच होनी थी, लेकिन पॉपर ने खुद को प्रत्यक्षवाद का आलोचक होने का दावा करते हुए कार्यवाही को कुछ हद तक रोक दिया।
- इसके बावजूद, एडोर्नो (1903-1969) के पक्ष में आने वाले हेबरमास के साथ विवाद जारी रहा और पॉपर की कार्यप्रणाली पर पॉज़िटिविस्ट के रूप में हमले जारी रहे, और हंस अल्बर्ट (1904-1973) ने इस पद्धति को बचाया।
- इस बहस में भी, जैसा कि पहले वाले थे, एक पक्ष ने मानव / ऐतिहासिक / सांस्कृतिक / सामाजिक विज्ञान पर जोर दिया, जिसमें उनकी अपनी कार्यप्रणाली थी, जो प्राकृतिक विज्ञान से अलग थी।
- मानव विज्ञान की इस विशिष्ट पद्धति को 'भाष्य विषयक' (hermeneutics) नाम दिया गया था। इसकी विवेचना हम अगले भाग में करेंगे।

धन्यवाद